धरो मन, भानुलली को ध्यान ।
जाको ध्यान धरत निशिवासर, सुंदर श्याम सुजान ।
कनक मुकुट सिर चारु चंद्रिका, तापर लर मुक्तान ।
चूनरि जरिन किनार गौर तनु, नीलांबर परिधान ।
श्रुति ताटंक गुंथी वर वेणी, लजवति भौंह कमान ।
नासा भल मुक्ताहल सोहति, मन मोहति मुसकान ।
पग पायल गति अति अभिरामिनि, लखि मराल सकुचान ।
पाय 'कृपालु' सरस अस स्वामिनि, चरन न कस लपटान ॥

भावार्थ-
अरे मन ! तू निरंतर ही वृषभानुनंदिनी राधिकाजी का ध्यान किया कर । जिनका ध्यान साक्षात् ब्रह्म श्री श्यामसुन्दर भी निरंतर करते रहते हैं । जिनके सिर पर स्वर्ण का मुकुट एवं मनोहर चंद्रिका तथा उसके ऊपर भी मोतियों की लड़ शोभा दे रही है । जिनकी जरी -किनारे ही चुनरी तथा नीले रंग का वस्त्र है और जो स्वयं गौर वर्ण की हैं । जिनके कान में झुमके झूल रहे हैं तथा अत्यन्त ही सुन्दर रीति से वेणी गुथी हुई है । एवं जिनकी भौंहे धनुष को लज्जित कर रही हैं । जिनकी नासिका में सुन्दर मुक्ताहल शोभित हो रहा है एवं जो मुस्कराती हुई हठात् मन को मोहित कर लेती हैं । जिनके पैरों में पायल हैं तथा जिनकी चाल हंसों को भी लज्जित करने वाली अत्यन्त मतवाली है । 'कृपालु' कहते हैं कि ऐसी परम मधुर स्वामिनी को पाकर भी, अरे मन ! तू उनके चरणों में सदा के लिये क्यों नहीं लिपट गया ?

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिषत्